दीपोत्सव प्रारंभ...

इंदौर, बुधवार, 30 अक्टूबर 2024

राइजिंग इन्दौर

शुभ दिवाली

मूल्य 2 रूपए, पेज- 8

वर्ष -11, अंक-43

क्यों मनाते हैं...

दीपावली महापर्व...

दीपावली का त्योहार तो हम कई सदी से मना रहे हैं । यह त्योहार क्यों मनाया जाता है इसे लेकर कई कथाएं प्रचलित हैं। इस बार दीपों के पर्व दीपावली की बेला में हम अपने पाठकों को दे रहे हैं दीपावली मनाने के पीछे सभी कथानक की जानकारी। इसके साथ ही वह कथा भी जिससे मालूम पड़ता है कि दीपावली पर लक्ष्मी जी के साथ गणेश जी की पूजा भी क्यों की जाती है? हमें उम्मीद है कि लीक से हटकर प्रथम पृष्ठ पर दी जा रही यह जानकारी आपको पसंद आएगी ।

पहली कथा

यूं तो दीपावली मनाने की सर्व प्रचलित कथा रामजी से जुड़ी है। तदानुसार रावण का वध करके 14 वर्ष के वनवास के बाद जब श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण और पत्नी सीता के साथ अयोध्या लौटे थे। तब अयोध्यावासियों ने उनके लौटने की खुशी में दीपावली मनाई थी। यह घटना त्रेता युग की है। जबकि पुराणों में कई वृतांत ऐसे हैं जो स्पष्ट करते हैं कि इस युग के पहले से ही दीपावली मनाई जाती रही है।

दूसरी कथा

राजा बलि और भगवान विष्णु की कथा इस प्रकार है - राजा बलि, भक्त प्रह्लाद के पौत्र और असुरों के राजा थे। वे वैरोचन नाम के साम्राज्य के सम्राट थे तथा परम पराक्रमी और सभी युद्ध कौशल में निपुण थे। एक बार राजा बलि ने विश्वजीत और शत अश्वमेध यज्ञों को संपन्न करके तीनों लोकों पर अधिकार जमा लिया। राजा बलि की इस स्थिति को देखते हुए इंद्र को स्वर्ग का सिंहासन बचाने की बहुत चिंता हुई। इसके लिए उन्होंने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। तब भगवान विष्णु वामन (ब्राह्मण) रूप में राजा बलि के पास पहुंचे। राजा बलि ने ब्राह्मण लड़के से पूछा कि वह क्या चाहता है? लड़के ने जवाब दिया कि उसे मात्र तीन पग जमीन चाहिए। राजा बलि ने वामन के समक्ष तीन पग जमीन देने का संकल्प छोड़ दिया। तब वामन रूप में भगवान विष्णु ने अपने एक पैर से पृथ्वी और दूसरे पैर से स्वर्ग को नाप लिया। अब तीसरा पग रखने के लिए कोई जगह शेष नहीं बची थी, जिस पर राजा बलि ने अपना मस्तक आगे कर दिया। भगवान वामन ने अपना तीसरा पग राजा बलि के सिर पर रखकर उसका मान भंग किया। भगवान विष्णु ने राजा बलि को पाताल लोक भेज दिया और स्वर्ग का शासन इंद्र देव को सौंप दिया। स्वर्ग का शासन इंद्र को प्राप्त होने पर वहां दीपावली मनाई गई।

तीसरी कथा

रक्त बीज नामक एक राक्षस था। उसको यह वरदान प्राप्त था कि उसके रक्त की एक बूंद भी धरती पर गिरने पर उससे एक और शक्ति शाली राक्षस पैदा हो जाएगा। इस वरदान से सारे देवतागण एवं यक्षगणादि त्रस्त हो गए थे। उसके आतंक को समाप्त करने के लिए उन सभी ने शक्ति मां से प्रार्थना की। तब शक्ति मां दुर्गा ने काली का रूप धारण किया और रक्त बीज के रक्त की हर एक बूंद को बगैर धरती पर गिराये पी लिया और उस राक्षस का अंत कर दिया। इस प्रक्रिया में मां काली को बहुत अधिक क्रोध आया था और वह शांत ही नहीं हो रही थी। मां काली के भयंकर क्रोध को सिर्फ महादेव ही शांत कर सकते थे। मां के क्रोध को शांत करने के लिए भगवान शिव स्वयं काली मां के मार्ग में लेट गए। क्रोधित मां काली ने जैसे ही भगवान शिव की छाती के ऊपर पांव रखा, वो झिझक कर ठहर गईं और उनका गुस्सा शांत हो गया। शिवजी के शरीर के स्पर्श से मां काली शांत स्वरूप में आ गई। दीपावली को माता के इसी शांत स्वरूप की पूजा होती है।

चौथी कथा

त्रेता युग के पश्चात द्वापर में जब श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध किया था। तब भी नगर वासियों ने दीपावली मनाई थी। इसी प्रकार दीपावली मनाने के अलग-अलग संप्रदायों में अथवा जातियों में पृथक पृथक कारण हैं। किंतु दीपावली मनाने की संपूर्ण कथाओं की एक केंद्रीय मान्यता है और वह है बुराई पर अच्छाई की विजय का पर्व है और दीपावली इसी भावना के साथ मनाई जाती है और मनाना चाहिए ।

पांचवी कथा

दीपावली का त्यौहार मनाने के पीछे एक कथानक और भी प्रचलित है। इस कथानक में कहा गया है कि इस दिन समुद्र में अमृत मंथन किया गया था। इस अमृत मंथन के दौरान मां लक्ष्मी जी समुद्र से अमृत का कलश लेकर प्रकट हुई थी। यही कारण है कि इस दिन को दीपावली के रूप में मनाया जाता है। यह दिन अमृतमई मां लक्ष्मी जी के प्रकट होने का दिन है। इसी कारण से इस दिन को दीपावली के रूप में मनाया जाता है। प्रकट होने के पश्चात लक्ष्मी जी के द्वारा इस दृष्टि के पालन करता भगवान विष्णु से विवाह रचाया गया।

संकलन-उमेश पांडे/शेष पेज 3-8 पर

दीपोत्सव की शुभकामनाएं

राइजिंग इंदौर के सभी पाठकों, शुभ इच्छा रखने वाले नागरिकों और विज्ञापनदाताओं को राइजिंग इंदौर परिवार की ओर से देपोत्सव के इस पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं। मां भगवती-लक्ष्मी की कृपा से सभी के सपने साकार हो। - संपादक

दे ठंडक लाये रूझ जख्मेरूझ से राहत अद्भूत

खाज, खुजली, खील, फोडे,
अर्श, हाथ पैर का फटना,
मुळव्याध, जलने-कटने पर
एवं सभी चर्म रोगो के लिए।

१९२५ से आपकी सेवामें
भावसार आयुर्वेदिक®
जख्मेरुझ
गुलाबी मलम

सभी मेडीकल और आयुर्वेदीक स्टोर्समें उपलब्ध।

भावसार केमीकल्स प्रा. ली. व्यारा (तापी), गुजरात. • Customer Care : 09427177007 • www.bhawsarayurveda.com

PROMSERVE 211219

चार ब्रिज के लोकार्पण के बाद आईडीए के पास एक और नया ब्रिज आया

मेट्रो प्रोजेक्ट आने से बड़ा गणपति ब्रिज निरस्त करना पड़ा था
अंडरग्राउंड मेट्रो का मामला निपटा और ब्रिज का रास्ता सुलझा
ब्रिज के लिए आईडीए ने टैंडर प्रक्रिया पूरी करते हुए ठेका सौंपा

राइजिंग इन्दौर
■ विपिन नीमा

इंदौर। शहर में फ्लाईओवर ब्रिज की संख्या बढ़ती जा रही है। इंदौर विकास प्राधिकरण द्वारा बनाए गए भंवरकुंआ, फूटीकोठी, खजराना और लवकुश फ्लाईओवर ब्रिज के लोकार्पण होने के बाद विकास प्राधिकरण एक और नया ब्रिज बनाने की तैयारी कर रहा है। बड़ा गणपति फ्लाईओवर ब्रिज के लिए किए गए सर्वे रिपोर्ट आने के बाद प्राधिकरण ने टैंडर प्रक्रिया पूरी करते हुए पूरा प्लान तैयार कर लिया है। ठेकेदार कम्पनी को चयन भी लगभग हो चुका है। प्लान के मुताबिक यह ब्रिज लगभग 600 मीटर लम्बा और 12 मीटर चोड़ा होगा। लगभग 23 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाला यह फ्लाईओवर ब्रिज 3 लेन का होगा। बताते है की तीन साल पहले गंगवाल से बड़ा गणपति होते हुए एरोड्रम तक फ्लाय ओवहर ब्रिज बनाने की तैयारी की जा चुकी थी, लेकिन मेट्रो प्रोजेक्ट आने की वजह से फ्लाईओवर प्रोजेक्ट को निरस्त कर दिया था। हाईकोर्ट से लेकर एयरपोर्ट तक मेट्रो का ट्रेक अंडर ग्राउंड होने से निरस्त हुए ब्रिज की स्थिति पूरी तरह साफ हो गई।

ब्रिज के बनने से ट्रेफिक की परेशानी काफी हद तक कम हो जाएगी

आधिकारिक तौर पर मिली जानकारी के मुताबिक इंदौर विकास प्राधिकरण ने गत दिनों बड़ा गणपति फ्लाईओवर ब्रिज की टैंडर प्रक्रिया पूरी कर ली है। ब्रिज के निर्माण के लिए आईडीए ने ठेकेदार कम्पनी को ठेका दे दिया गया है। यह ब्रिज 3 लेन का होगा। गंगवाल से खालसा, राजमोहल्ला चौराहा से महेश नगर, अंतिम चौराहे होते हुए बड़ा गणपति तक ब्रिज बनाया जाएगा। आईडीए द्वारा कराए गए सर्वे के मुताबिक खालसा कॉलेज से जिंसी की ओर प्रति घंटे 3000 वाहन आते हैं। ब्रिज के बनने से यह दबाव काफी हद तक कम हो जाएगा।

अंतिम चौराहे की तरफ से जिंसी की तरफ उतरेगा

प्रारम्भिक जानकारी के मुताबिक बड़ा गणपति चौराहे पर बनने वाले फ्लाईओवर ब्रिज के लिए प्लान तैयार किया गया है। उसके मुताबिक लगभग 600 मीटर लम्बा होगा और इसकी चौड़ाई लगभग 12 मीटर रहेगी और 4 लेन होगा। लगभग 33 करोड़ रुपए की लागत से ब्रिज का निर्माण किया जाएगा। आईडीए की सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक बड़ा गणपति चौराहे से प्रतिदिन लगभग 1 लाख वाहनों की आवाजाही रहती है। यानी हर घंटे 10 हजार वाहन आते जाते है। इस चौराहे पर सुबह करीब 11 बजे से दोपहर एक बजे तक तथा शाम को 5 बजे से 8 बजे तक वाहनों का सर्वाधिक दबाव रहता है। इस फ्लाईओवर पर दोनों तरफ फुटपाथ भी बनाए जाएंगे। ब्रिज अंतिम चौराहे की तरफ से जिंसी की तरफ उतरेगा। इस फ्लाईओवर से एयरपोर्ट रोड की तरफ से आने वाला यातायात बिना बाधा के पोलोग्राउंड की तरफ निकल जाएगा।

मेट्रो प्रोजेक्ट के कारण निरस्त करना पड़ा था फ्लाईओवर ब्रिज

गंगवाल बस स्टैंड से लेकर एयरपोर्ट तक वीआईपी मार्ग पर वाहनों का दबाव इतना बढ़ गया था कि वाहनों को निकलने में परेशानी होती रहती थी। गंगवाल बस स्टैंड, राजमोहल्ला चौराहा, अंतिम चौराहा, बड़ा गणपति चौराहा, व्यास पुलिया तक वाहनों का काफी जाम लगा रहता। एयरपोर्ट जाने वाले लोगों को काफी परेशानी होती है। कई बार तो इन चौराहों पर। जाम लग जाने के कारण यात्रियों की फ्लाइट तक मिस हो जाती है। इस दबाव को कम करने के लिए ही प्रशासन ने एलिवेटेड कॉरिडोर की संभावना तलाशी थी। तात्कालिक मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 3:45 किलोमीटर का लंबा एलिवेटेड बनाने की मंजूरी दे दी थी। प्रशासन ने एलिवेटेड के लिए फिजिकल सर्वे भी करवा लिया था। सर्वे रिपोर्ट के आधार पर फोर लेन बनना तय हो गया था। इसी बीच एलिवेटेड को बनाने के लिए सब क्रछ तैयारियां हो गई थी, लेकिन इंदौर - भोपाल में मेट्रो रेल प्रोजेक्ट ने आमद दे दी। जब मेट्रो कागजों पर भी नहीं आई थी, तब से ही एलिवेटेड होल्ड पर चला गया था।

रीगल ब्रिज पर निगम का नया प्रयोग

इस प्रयोग के साथ एक बार फिर नागरिकों के समक्ष खतरा बड़ा

इंदौर नगर निगम के द्वारा रीगल ब्रिज पर एक बार फिर नया प्रयोग किया जा रहा है। इस ब्रिज पर अब पक्के डिवाइडर बनाने का काम चल रहा है। इस प्रयोग के साथ एक बार फिर इस ब्रिज पर नागरिकों के समक्ष खतरा बढ़ गया है।

राइजिंग इन्दौर
■ विपिन नीमा

पुराने ब्रिज पर डिवाइडर रखने से हादसों का खतरा बढ़ सकता है, क्योकि कई बार ब्रिज पर दो पहिया वाहन ओवर टेक करते है और डिवाइडरों से टकराने का खतरा बना रहेगा।

61 साल पुराने रीगल ब्रिज पर नगर निगम ने नया प्रयोग शुरू कर दिया है। यहां पहले अस्थाई डिवाइडर बीते पांच सालों से लगे थे और अब वहां स्थाई तौर पर डिवाइडर बनाए जा रहे है। इसके लिए ब्रिज के मध्य हिस्से को खोदा भी गया है। इससे ब्रिज का वजन और बढ़ सकता है। इस ब्रिज के क्रछ हिस्से खतरनाक हो चुके है और दोनो पैदल सीढ़ियां इस कारण बंद करना पड़ी। कुछ हिस्सों में सीमेंट का प्लास्टर उखड़ चुका है और सरिए भी दिखाई देने लगे है। छह माह पहले ही ब्रिज की नगर निगम ने मरम्मत की थी । रीगल ब्रिज इंदौर के नए और पुराने शहर के हिस्सों को जोड़ता है। यह दो लेन ब्रिज है। इस पर ट्रैफिक काफी बढ़ चुका है और यहां एक और ब्रिज बनाने की प्लानिंग की जा रही है। पुराने ब्रिज पर डिवाइडर रखने से हादसों का खतरा बढ़ सकता है, क्योकि कई बार ब्रिज पर दो पहिया वाहन ओवर टेक करते है और डिवाइडरों से टकराने का खतरा बना रहेगा।

नगर निगम डिवाइडर पर पोल लगाकर विद्युत सज्जा भी करेगा। अस्थाई डिवाइडर होन के कारण ब्रिज फिलहाल बगैर अनुमति लगने वाले पैनर पोस्टरों से बचा रहता था, लेकिन स्थाई डिवाइडर और पोल लगाने के बाद यहां भी बैनर पोस्टर नजर आने लगेंगे। नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे ने कहा कि पुराने ब्रिज पर पैसा खर्च करने के बजाए नए ब्रिज की प्लानिंग नगर निगम को करना चाहिए,क्योकि दो लेन ब्रिज ट्रैफिक के हिसाब से कम उपयोगी साबित हो रहा है।

शहर के सारे बड़े बाजारों में खरीदारी करने के लिए भीड़ उमड़ी

भारी महंगाई के बावजूद करोड़ों का कारोबार

दीपावली के त्यौहार ने बाजार में ला दी रौनक

भारी महंगाई के बावजूद दीपावली के इस त्यौहार ने बाजार में करोड़ों का कारोबार करवा दिया है। इस कारोबार के कारण बाजार में रौनक आ गई है। शहर के सारे बड़े बाजारों में खरीददारी करने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी।

राइजिंग इन्दौर
■ रिपोर्टर

दीपावली का यह त्यौहार साल का सबसे बड़ा त्यौहार होता है। इस त्यौहार के मौके पर नागरिकों के द्वारा बड़े पैमाने पर खरीदारी की जाती है। दीपावली के त्योहार पर हर दिन की खरीदारी का एक अलग दस्तूर बना हुआ है। इस त्यौहार के पहले आने वाले पुष्य नक्षत्र में नागरिकों के द्वारा सोने चांदी के जेवरात खरीदे जाते हैं। इसके साथ ही इस पांच दिवसीय पर्व के पहले दिन धनतेरस पर बर्तन और सोना चांदी खरीदने की परंपरा है। इसके साथ ही इस त्यौहार के आगमन के मौके पर पूजन सामग्री घर की साज सज्जा का सामान और त्योहार के अवसर पर पहनने के लिए नए कपड़े जरूर लिए जाते हैं।

पिछले साल की तुलना में इस बार महंगाई की मार सबसे ज्यादा है। रूस और यूक्रेन के युद्ध के चलते हुए सोने चांदी के भाव तो आसमान पर उड़ रहे हैं। जो लोग हमेशा दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन के लिए चांदी का नया सिक्का खरीदने आए हैं उन लोगों को भी इस बार अपनी इस परंपरा को कायम रखने के बारे में सोचना पड़ा है। इस बार तो चांदी 95000 रुपए किलो तो सोना 85000 रुपए तोला के भाव पर अटका हुआ है। हर दिन ही सोना चांदी के भाव में दो से 5000 तक का उठाओ गिराओ आ रहा है। अधिकांश दिनों में तो भाव बड़े ही हैं। जिन दिनों में भाव घटे तो उन दिनों में भाव 500 से लेकर 800 तक ही घटे हैं।

दीपावली पर नए कपड़े खरीदने की लोगों की आदत और परंपरा के चलते हुए इस बार कपड़ों के दाम में भी ऊंचाई नजर आई। रेडीमेड गारमेंट के शोरूम पर ब्रांडेड कपड़े की कीमतों में करीब 20 से 30 प्रतिशत की वृद्धि हो गई है। कुछ महीने पहले तो सभी ब्रांड के द्वारा सेल लगाकर माल बेचा जा रहा था लेकिन दीपावली के त्यौहार के मौके पर किसी भी ब्रांड की कोई सेल शहर में नहीं लगी। स्थानीय रेडीमेड गारमेंट निर्माता के द्वारा बनाए गए नई डिजाइन और बेहतर क्वालिटी के कपड़ों की कीमत भी ऊंचाई पर रही। अब तो कपड़ा खरीद कर टेलर के माध्यम से कपड़े बनवाने का सिलसिला करीब करीब खत्म हो गया है। इसके बावजूद जो लोग पुरानी परंपरा के अनुसार कपड़े खरीद कर टेलर के यहां बनवाने के लिए गए उन्हें भी महंगाई की मार का सामना करना पड़ा। कई लोगों का शरीर बेडौल होने के कारण उन्हें रेडीमेड कपड़े फिट नहीं बैठ पाते हैं ऐसे में उनके लिए यह मजबूरी होती है कि वह टेलर के यहां जाकर कपड़े बनवाए। ऐसे लोगों को कपड़ों की सिलाई की मोटी कीमत चुकाना पड़ी। टेलर की दुकानों पर भी कामकाज का रस था।

इस त्यौहार के मौके पर नागरिकों के द्वारा बहुत ज्यादा किराने का सामान भी खरीदा जाता है। इस सामान को खरीदने के लिए जब लोग किराने की दुकान पर पहुंचे तो वहां भाव सुनकर उनके मुंह खुला के खुला रह गए। इस समय बाजार में कोई सी भी डाल सो रुपए किलो से काम के दम पर नहीं है। सबसे ज्यादा उपयोग की जाने वाली तुवर यानी की अरहर की दाल का भाव 180 किलो पर पहुंच गया है। मूंग चना मसूर और उड़द की दाल के भाव भी कोई काम नहीं है। त्यौहार के समय सबसे ज्यादा उपयोग किए जाने वाले रवा मैदा की कीमत भी ऊंचाई पर है। खाने योग्य तेल और शुद्ध घी के दाम के बारे में तो बात ही नहीं की जा सकती है ।

शहर का प्राचीन महालक्ष्मी मंदिर

संपादकीय...

अंधेरे पर प्रकाश की जीत का उजाला आम आदमी तक पहुंचे...

दीपावली का पर्व अंधेरे पर प्रकाश की जीत का पर्व है। यह पर्व मां लक्ष्मी की साधना आराधना का पर्व है। यह पर्व हमारे सपनों को पूरा करने के लिए भगवान से मदद चाहने का पर्व है। इस पर्व के माध्यम से हम अपने वर्तमान के सपनों को भविष्य में पूरा करने का भाव प्रकट करते हैं। निश्चित तौर पर काली घनी और गहरी

■ गौरव गुप्ता

अमावस्या के अंधेरे को दीपक का प्रकाश दूर कर देता है। आज इसी प्रकाश की आवश्यकता देश के आम नागरिक को है। अंधेरे पर प्रकाश की जीत का उजाला आम आदमी तक पहुंचना चाहिए। महंगाई की मार से पीड़ित आम नागरिक अब तो सपने देखने में भी डरने लगा है। ऐसे में उसके मन में उसके सपने के पूरा होने का भरोसा पैदा किए जाने की आवश्यकता है।

8 पेय पदार्थ जो त्यौहारी डिटॉक्स में मदद कर सकते हैं

त्यौहारों के मौसम में अक्सर हमें पेट फूला हुआ महसूस होता है, इसलिए डॉक्टर आरती मेहरा। ने यहां डिटॉक्सीफाई करने में मदद करने के लिए आठ ताजा पेय बताए हैं: जैसे नींबू पानी, ग्रीन टी, खीरा पुदीना पानी, चुकंदर का रस, सेब साइडर सिरका टॉनिक, अदरक हल्दी चाय, अनानास पुदीना स्मूदी, और हर्बल डिटॉक्स चाय। ये पेय पाचन में सहायता करते हैं, यकृत के कार्य को बढ़ावा देते हैं, और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देते है।

डॉक्टर आरती मेहरा के अनुसार त्यौहारों के मौसम में अक्सर बहुत सारे स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ और पेय पदार्थ आते हैं, जो हमें सुस्त और पेट फूला हुआ महसूस करा सकते हैं। जैसे-जैसे हम नए साल में प्रवेश करते हैं, हममें से कई लोग अपने शरीर को फिर से तरोताजा करने और तरोताजा रखने के तरीके खोजते हैं।

डिटॉक्सिफाई करना शरीर को तरोताजा रखने के लिए। डिटॉक्सिफाई करना कोई मुश्किल काम नहीं है; यह स्वादिष्ट और तरोताजा करने वाला हो सकता है! यहां आठ पेय पदार्थ दिए गए हैं जो आपके त्यौहारी डिटॉक्स में मदद कर सकते हैं।

नींबू पानी

अपने दिन की शुरुआत गर्म नींबू पानी से करना एक सरल लेकिन प्रभावी डिटॉक्स ड्रिंक है। नींबू में मौजूद साइट्रिक एसिड पाचन में सहायता करता है और विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने के लिए लीवर को उत्तेजित करता है। बस एक गिलास गर्म पानी में आधा नींबू निचोड़ें और सुबह सबसे पहले इसका आनंद लें।

हरी चाय

एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर ग्रीन टी एक शक्तिशाली डिटॉक्स ड्रिंक है। यह लीवर के कार्य को बेहतर बनाता है और मेटाबोलिज्म को बढ़ाता है, जिससे शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद मिलती है। इसे गर्म या ठंडा करके पिएं, और अतिरिक्त डिटॉक्स बूस्ट के लिए नींबू का एक टुकड़ा भी मिलाएं।

डॉ. आरती मेहरा
आहार एवं पोषण विशेषज्ञ
7999788456

खीरा पुदीना मिश्रित पानी

खीरा और पुदीना दोनों ही हाइड्रेटिंग और ताजगी देने वाले होते हैं। आधे खीरे को काटें और उसे मुट्ठी भर ताजे पुदीने के पत्तों के साथ पानी के घड़े में डालें। इसे क्रछ घंटों के लिए फ्रिज में रख दें। यह पेय न केवल हाइड्रेट करता है बल्कि पाचन में भी सहायता करता है और सूजन को कम करने में मदद करता है।

चुकंदर का रस

चुकंदर अपने विषहरण गुणों के लिए जाना जाता है, खास तौर पर लीवर के लिए। चुकंदर का जूस पीने से पोषक तत्वों का एक केंद्रित स्रोत मिल सकता है। स्वादिष्ट मीठा और मिट्टी जैसा डिटॉक्स ड्रिंक बनाने के लिए चुकंदर के जूस को गाजर और सेब के साथ मिलाएं।

सेब साइडर सिरका टॉनिक

सेब साइडर सिरका अपने स्वास्थ्य लाभों के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें पाचन को बढ़ावा देना और रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करना शामिल है। एक से दो चम्मच कच्चे, बिना फिल्टर किए सेब साइडर सिरका को एक गिलास पानी, शहद की एक बूंद और दालचीनी के एक छिड़काव के साथ मिलाएं और स्वादिष्ट टॉनिक बनाएं।

अदरक हल्दी चाय

अदरक और हल्दी दोनों ही शक्तिशाली सूजनरोधी तत्व हैं जो विषहरण में सहायता कर सकते हैं। ताजा अदरक और हल्दी को पानी में उबालें, फिर छान लें और स्वाद के लिए थोड़ा शहद या नींबू मिलाएं। यह गर्म पेय पाचन को शांत कर सकता है और आपके समग्र स्वास्थ्य को बढ़ा सकता है।

अनानास पुदीना स्मूदी

अनानास में ब्रोमेलैन नामक एंजाइम होता है जो पाचन में सहायता करता है और सूजन को कम करता है। ताजा अनानास को मुट्ठी भर पुदीने और थोड़े नारियल पानी के साथ मिलाकर एक ताजा स्मूदी बनाएं जो पाचन तंत्र को साफ करने में मदद करती है।

हर्बल डिटॉक्स चाय

डेंडेलियन रूट, मिल्क थीस्ल या बिछुआ या तुलसी, अदरक और जीरा जैसी हर्बल चाय लीवर के काम करने और डिटॉक्सिफिकेशन में मदद कर सकती है। अपनी पसंदीदा हर्बल चाय का एक कप बनाएं और पूरे दिन इसे पीते रहें, इससे आपके सिस्टम को साफकरने और समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी।

डॉक्टर आरती मेहरा ने बताया कि निष्कर्ष त्यौहारों के मौसम के बाद डिटॉक्स करना इतना भी मुश्किल नहीं है। इन आठ स्वादिष्ट पेय पदार्थों को अपनी दिनचर्या में शामिल करके, आप अपने शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने और तरोताजा महसूस करने में मदद कर सकते हैं। डिटॉक्स की अपनी यात्रा शुरू करते समय हाइड्रेटेड रहना और अपने शरीर की बात सुनना याद रखें। स्वस्थ रहने के लिए शुभकामनाएं!

गिफ्ट डीड को सामान्य रूप से निरस्त नहीं किया जा सकता: सुप्रीम कोर्ट

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि उपहार विलेख को सामान्य रूप से निरस्त नहीं किया जा सकता, विशेषकर तब जब डीड में निरस्तीकरण का कोई अधिकार सुरक्षित न हो। यदि गिफ्ट डीड में उल्लिखित कंडीशन का उल्लंघन होने पर निरस्त किए जाने पर विचार किया जा सकता है

संपत्ति हस्तांतरण अधिनियम की धारा 126 के अनुसार गिफ्ट डीड को निरस्त करने की शर्तों को भी स्पष्ट किया गया।

जब गिफ्ट डीड दाता द्वारा उपहार प्राप्तकर्ता के पक्ष में निष्पादित किया जाता है, जिसमें उपहार का उद्देश्य निर्धारित किया जाता है। किसी भी आकस्मिकता में इसके निरस्तीकरण के लिए कोई अधिकार सुरक्षित नहीं होता है तो गिफ्ट प्राप्तकर्ता द्वारा गिफ्ट के उद्देश्य की पूर्ति इसे वैध उपहार बनाती है, जिससे यह अपरिवर्तनीय हो जाता है।

इस मामले में अपीलकर्ता-प्रतिवादी ने वर्ष 1983 में खादी लुंगी और खादी यार्न के निर्माण के लिए वादी-प्रतिवादी को मुकदमा संपत्ति हस्तांतरित करने के लिए गिफ्ट डीड निष्पादित किया, जिसमें वादी को व्यक्तिगत लाभ के लिए संपत्ति का उपयोग करने से प्रतिबंधित करने की शर्त थी। गिफ्ट डीड में निर्दिष्ट किया गया कि न तो दाता और न ही उनके उत्तराधिकारियों को हस्तांतरण के बाद संपत्ति पर कोई अधिकार रहता है। गिफ्ट दाता की पूर्ण सहमति से दिया गया। डीड पूर्ण था, जिसमें निरस्तीकरण की कोई शर्त नहीं और केवल संपत्ति के इच्छित उपयोग को निर्धारित किया गया।

हालांकि, वर्ष 1987 में अपीलकर्ता-प्रतिवादी ने गिफ्ट डीड निरस्त की, जिसे वादी-प्रतिवादी ने इस आधार पर कब्जे की वसूली के लिए मुकदमा दायर करके चुनौती दी कि एक बार खादी लुंगी और खादी यार्न की विनिर्माण इकाई स्थापित करके गिफ्ट डीड में निर्धारित उद्देश्य पूरा हो गया। फिर डीड में निरस्तीकरण की किसी भी शर्त की अनुपस्थिति में विलेख निरस्त करने योग्य नहीं होगा।

अपीलकर्ता का तर्क स्वीकार करते हुए न्यायालय ने कहा कि गिफ्ट डीड को तब निरस्त नहीं किया जा सकता, जब गिफ्ट डीड के अंतर्गत ऐसा कोई अधिकार एवं शत सुरक्षित न हो।

न्यायालय ने कहा, इसमें कोई संदेह नहीं है कि वैध रूप से किया गया गिफ्ट कुछ आकस्मिकताओं के अंतर्गत निलंबित या निरस्त किया जा सकता है, लेकिन सामान्यतः इसे निरस्त नहीं किया जा सकता, विशेषकर तब जब गिफ्ट डीड के अंतर्गत ऐसा कोई अधिकार सुरक्षित न हो।

इस संबंध में न्यायालय ने तीन शर्तें निर्धारित कीं, जिसमें बताया गया कि गिफ्ट डीड कब निरस्त किया जा सकता है और उन शर्तों का परीक्षण वर्तमान मामले के तथ्यों के साथ किया, जिससे यह पता लगाया जा सके कि गिफ्ट डीड निरस्त किया जा सकता है या नहीं।

पहली शर्त यह है कि जब दाता और गिफ्ट प्राप्तकर्ता किसी निर्दिष्ट घटना के घटित होने पर इसके निरस्तीकरण के लिए सहमत होते हैं। गिफ्ट डीड में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि दाता और गिफ्ट प्राप्तकर्ता किसी भी कारण से गिफ्ट डीड के निरस्तीकरण के लिए सहमत हुए, किसी निर्दिष्ट घटना के घटित होने पर तो बिल्कुल भी नहीं। इसलिए गिफ्ट डीड के निरस्तीकरण की अनुमति देने वाला पहला अपवाद इस मामले में लागू नहीं होता।

सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में कहा की गिफ्ट डीड को सामान्य रूप से निरस्त नहीं किया जा सकता, विशेषकर तब जब डीड में निरस्तीकरण का कोई अधिकार उल्लेख नहीं किया गया हो

दूसरा, यदि पक्षकार इस बात पर सहमत होते हैं कि इसे दानकर्ता की इच्छा मात्र से पूर्णतः या आंशिक रूप से निरस्त किया जा सकता है तो गिफ्ट डीड पूर्णतः या आंशिक रूप से शून्य हो जाएगा। वर्तमान मामले में गिफ्ट डीड को पूर्णतः या आंशिक रूप से या दानकर्ता की इच्छा मात्र से निरस्त करने के लिए पक्षों के बीच कोई समझौता नहीं है। इसलिए ऐसे गिफ्ट डीड को निरस्त करने या निरस्त करने की अनुमति देने वाली उपरोक्त शर्त लागू नहीं होती।

संजय मेहरा
हाईकोर्ट एडवोकेट
98270 74132

तीसरा, गिफ्ट उस स्थिति में निरस्त किया जा सकता है जब यह अनुबंध की प्रकृति का हो जिसे निरस्त किया जा सकता है। विचाराधीन उपहार अनुबंध के रूप में नहीं है। अनुबंध, यदि कोई हो निरस्त करने योग्य नहीं है।

इस प्रकार, गिफ्ट डीड निरस्त करने की अनुमति देने वाले अपवादों में से कोई भी वर्तमान मामले में लागू नहीं होता। इस प्रकार, एकमात्र निष्कर्ष यह निकलता है कि गिफ्ट डीड, जो वैध रूप से बनाया गया, किसी भी तरीके से निरस्त नहीं किया जा सकता था। तदनुसार, दिनांक 17.08.1987 का निरस्तीकरण डीड शुरू से ही अमान्य है। इसका कोई महत्व नहीं है, जिसे अनदेखा किया जाना चाहिए।' तदनुसार, अपील खारिज कर दी गई।

केस : एन. थाजुदीन बनाम तमिलनाडु खादी और ग्रामोद्योग बोर्ड,

वर्तमान में आमतौर पर संपति दाता अपने वारिसों को अपनी संपत्ति को वसीयत के माध्यम से प्रदान करता है। वसीयत में वारिसों को संपत्ति का हस्तांतरण एवं स्वामित्व वसीयत देने वाले की मृत्यु के पश्चात प्राप्त होता है यदि जीवित रहते हुए संपत्ति अपने उत्तराधिकारियों को देने का एकमात्र माध्यम गिफ्ट डीड है जीवित रहते हुए संपत्ति का स्वामित्व संपत्ति को गिफ्ट करके अपने उत्तराधिकारियों को एवं किसी अन्य व्यक्तियों को भी प्रदान किया जा सकता है। गिफ्ट डीड यानी उपहार विलेख, संपत्ति के स्वामित्व को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को हस्तांतरित करने का कानूनी दस्तावेज है। इसमें पैसे का आदान-प्रदान नहीं होता। गिफ्ट डीड के जरिए, अचल संपत्ति, नकदी, या कोई और कीमती चीज उपहार में दी जा सकती है।

कोई भी व्यक्ति किसी संपत्ति या संपत्ति के स्वामित्व को किसी दूसरे व्यक्ति को दे सकता है।

गिफ्ट डीड एक कानूनी दस्तावेज है।

- गिफ्ट डीड के जरिए, संपत्ति का स्वामित्व पैसे के आदान-प्रदान के बिना हस्तांतरित किया जाता है।
- गिफ्ट डीड के जरिए, अचल संपत्ति, नकदी, या अन्य मूल्यवान संपत्ति उपहार में दी जा सकती है।
- गिफ्ट डीड के ज़रिए, संपत्ति का स्वामित्व जीवनकाल में हस्तांतरित किया जाता है।
- गिफ्ट डीड देने वाले व्यक्ति को दाता और पाने वाले व्यक्ति को दानकर्ता कहा जाता है।
- गिफ्ट डीड देने वाले व्यक्ति को कानूनी रूप से अनुबंध करने में सक्षम होना चाहिए।
- गिफ्ट डीड देने वाले व्यक्ति के पास उपहार में दी जाने वाली संपत्ति का पूरा स्वामित्व होना चाहिए।
- गिफ्ट डीड देने वाले व्यक्ति की उम्र 18 साल या उससे ज्यादा होनी चाहिए।
- गिफ्ट डीड को चुनौती देने के लिए, सिविल कोर्ट में जाया जा सकता है।
- एक बार पंजीकृत गिफ्ट डीड को रद्द करने के लिए, संपत्ति अंतरण अधिनियम, 1882 की धारा 126 की शर्तों को पूरा करना होता है।
- धारा 126: कब उपहार निलंबित या रद्द किया जा सकता है।
- 126. दान और दाता सहमत हो सकते हैं कि किसी निर्दिष्ट घटना के घटित होने पर, जो दाता की इच्छा पर निर्भर नहीं करती है, उपहार निलम्बित या रद्द कर दिया जाएगा; किन्तु ऐसा दान जिसके बारे में पक्षकार सहमत हैं कि वह दाता की इच्छा मात्र से पूर्णतः या भागतः रद्द किया जा सकता है, पूर्णतः या भागतः शून्य है, जैसा भी मामला हो।
- किसी भी मामले में उपहार को रद्द किया जा सकता है (प्रतिफल की कमी या विफलता को छोड़कर) जिसमें, यदि वह एक अनुबंध होता, तो उसे रद्द किया जा सकता था।
- जैसा कि पूर्वोक्त कहा गया है, को छोड़कर, किसी उपहार को वापस नहीं लिया जा सकता।
- इस धारा में निहित कोई भी बात बिना सूचना के प्रतिफल प्राप्त करने के लिए हस्तांतरित व्यक्तियों के अधिकारों को प्रभावित करने वाली नहीं समझी जाएगी।

रेखांकन

- (क) क, ख को एक खेत देता है, तथा ख की सहमति से अपने पास खेत वापस लेने का अधिकार सुरक्षित रखता है, यदि ख और उसके वंशज क से पहले मर जाते हैं, ख, क के जीवनकाल में बिना वंशजों के मर जाता है। क खेत वापस ले सकता है।
- (ख) क, ख को एक लाख रुपए देता है, तथा ख की सहमति से, उस लाख रुपए में से 10,000 रुपए अपनी इच्छानुसार वापस लेने का अधिकार अपने पास सुरक्षित रखता है। यह दान 90,000 रुपए तक वैध रहता है, किन्तु 10,000 रुपए तक शून्य है, जो क के ही हैं।

25 लाख दीपक लगाकर
अयोध्या बना रहा है नया इतिहास

राइजिंग इन्दौर
■ रिपोर्टर

अयोध्या। तीन दिवसीय दीपोत्सव का सोमवार को आगाज हुआ तो त्रेतायुग जैसी सजी अयोध्या का दर्शन कर सभी निहाल हो उठे। दो किलोमीटर तक हुई भव्य सजावट से अयोध्या की शोभा देखते ही बन रही है। उदया चौराहे से लेकर नयाघाट तक, धमर्पथ से लेकर सरयू पुल तक रामकथा के दृश्य सजीव प्रतीत होते दिख रहे हैं। लेजर शो व सांस्कृतिक कार्यक्रमों की बहुरंगी छटा बिखरने लगी है। आठवें दीपोत्सव की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। राम की पैड़ी पर दीप बिछाने का काम तकरीबन पूरा किया जा चुका है। 30 अक्टूबर को 25 लाख दीये जलाकर अयोध्या विश्व कीर्तिमान बनाने जा रही है। उल्लास और भगवान श्रीराम की स्तुति व भजनों से रामनगरी राममय हो उठी है। शाम होते ही राम की पैड़ी से लेकर सरयू घाट व रामकथा पार्क का पूरा क्षेत्र रोशनी से नहा उठा। लेजर शो व प्रोजेक्शन मैपिंग की रिहर्सल हुई तो लोग उमड़ पड़े। मुख्यमंत्री योगी बुधवार को राम की पैड़ी में दीप जलाएंगे।

इसके बाद पूरी रामनगरी रोशन हो उठेगी। राम की पैड़ी समेत पूरी अयोध्या में 29 लाख दीये जलाए जाएंगे। दीपोत्सव को लेकर अयोध्या मगन है। ऐसा लग रहा है जैसे राजा राम सगुण-साकार ज्योति रूप में अवतरित हो रहे हों। दो किलोमीटर तक हर ओर केवल दीपोत्सव की तैयारी दिख रही है। हर चौक-चौराहे पर सजावट हो रही है। रामपथ के डिवाइडर तक की पेंटिंग की जा रही है। घर-घर, मठ-मंदिर सज रहे हैं। राम की पैड़ी पर हजारों छात्र-छात्राओं की टीम दीपों की माला सजा रही है, तो राम की पैड़ी पर शाम होते ही लेजर शो में रामकथा की प्रस्तुति ने भक्तों को रामायण युग का अहसास करा दिया। मुख्य राजमार्ग के दोनों तरफ होर्डिंग, भव्य द्वार दीपोत्सव को प्रांतीय रूप दे रहे हैं। तरह-तरह के तोरणद्वार और घाटों की सजीधजी शृंखला सबको भा रही है। इस मौके पर लोक संस्कृति भी अछूती नहीं है। विभिन्न मंचों पर हो रही सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में भारत के समृद्ध लोक संस्कृति की झलक दिख रही है।

रामकथा पार्क में सजकर तैयार रामदरबार

रामकथा पार्क में रामदरबार सजकर तैयार हो गया है। 90 फीट लंबे रामदरबार की सजावट राजमहल की थीम पर की गई है। डिजिटल तरीके से दरबार के पीछे पूरे दृश्य को दर्शाने की योजना है। रामदरबार के ठीक सामने साधु-संतों के बैठने के लिए मंच बनाया गया है। सोमवार को अधिकारी पूरे दिन सीटिंग प्लान पर चर्चा करते नजर आए। रामकथा पार्क के प्रवेश द्वार पर रामकथा आधारित लाइटिंग युक्त तोरण द्वार आकर्षण बढ़ा रहे हैं।

अवधपुरी अति रुचिर बनाई। देवन्ह सुमन बृष्टि झरि लाई...रामचरित मानस की यह पंक्ति साकार होती दिख रही है। अद्भुत दृश्य, भव्य सजावट, पुष्पों की लड़ियां, रामनगरी में गूंज रही रामधुन भक्ति का चरम प्रदर्शित कर रहा है। रोशनी से नहाई सरयू को देखकर मन यही दुआ करता है कि इस अभिनव दीपरात्रि की सुबह नहीं आए।

– महंत डॉ. भरत दास

अवध में उत्सव है भारी...दीपोत्सव में कुछ इसी तरह का उल्लास है। जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि, उत्तर दिसि बहु सरयू पावनि...पंक्ति चरितार्थ हो रही है। आज अयोध्या में त्रेतायुग सजीव हो उठा है। रामलला भव्य महल में पहली दीपावली मनाएंगे तो पूरी अयोध्या जगमग होगी यह देखकर जीवन कृतार्थ होगा।

– डॉ. हरिप्रसाद दुबे, साहित्यकार

एकमात्र महालक्ष्मी मंदिर जहां रुपए और आभूषणों से होती है सजावट

राइजिंग इन्दौर
■ रिपोर्टर

रतलाम के महालक्ष्मी मंदिर में देशी-विदेशी नोट और आभूषणों के साथ माता के दर्शन होंगे। मंदिर का कोना-कोना नकदी और जेवरात से सजाया गया है। भारत का यह एकमात्र ऐसा मंदिर है, जहां दीपावली पर्व पर करोड़ों रुपए के साथ ही आभूषणों से सजावट की जाती है। ये रुपए और आभूषण भक्तों द्वारा दिए जाते हैं।

दीपावली पर्व के समापन पर भाईदूज के दिन प्रसादी के रुपए में भक्तों को उनके नोट और आभूषण लौटा दिए जाते हैं। अभी तक मंदिर में 1 करोड़ 47 लाख रुपए की गिनती हो चुकी है जबकि आभूषणों का अनुमान लगाया जा रहा है कि वह 3 करोड़ से ज्यादा के हैं।

रतलाम के माणक चौक स्थित इस मंदिर में नोटों और आभूषणों से सजावट की शुरुआत इस बार शरद पूर्णिमा पर 14 अक्टूबर से हुई थी। मंदिर में भक्त निशुल्क सेवा भी देते हैं। कोई नोटों की लड़ियां बनाता है तो कोई नोट लेकर आने वाले श्रद्धालुओं की इंट्री करता है। कुछ भक्त दिन से लेकर रात तक सजावट में लगे रहते हैं।

1 से लेकर 500 रुपए तक के नोटों से सजावट 1 रुपए से लेकर 20, 50, 100 और 500 रुपए के नए नोटों से मंदिर को सजाया जाता है। सजावट के लिए रतलाम के अलावा मंदसौर, नीमच, इंदौर, उज्जैन, नागदा, खंडवा, देवास समेत राजस्थान के कोटा से आए भक्तों ने अपनी श्रद्धानुसार राशि जमा कराई है।

महालक्ष्मी के कई भक्त तो ऐसे भी हैं, जो एक साथ 5 लाख रुपए तक मंदिर में रखकर जाते हैं। श्रद्धालुओं द्वारा दिए जाने वाले नोटों से मंदिर के लिए वंदनवार बनाया जाता है। महालक्ष्मी का आकर्षक श्रृंगार कर गर्भगृह को खजाने के रूप में सजाया जाता है।

मंदिर परिसर कुबेर के खजाने के रूप में दिखाई देता है। भक्त अपने घरों की तिजोरी तक मंदिर में सजावट के लिए रख जाते हैं। रतलाम के माणक चौक स्थित इस मंदिर में नोटों और आभूषणों से सजावट की शुरुआत इस बार शरद पूर्णिमा पर 14 अक्टूबर से हुई थी। मंदिर में भक्त निशुल्क सेवा भी देते हैं। कोई नोटों की लड़ियां बनाता है तो कोई नोट लेकर आने वाले श्रद्धालुओं की इंट्री करता है। कुछ भक्त दिन से लेकर रात तक सजावट में लगे रहते हैं।

इस सप्ताह आपके सितारे
30 अक्टूबर 2024 से 5 नवंबर 2024

किसी को संतान पक्ष से होगी पीड़ा तो किसी के व्यय ज्यादा होंगे

मेष- इस सप्ताह कारोबार में उछाल दिखेगा। आय भी बढ़ेगी। किसी व्यक्ति के सहयोग से कोई कार्य होने की संभावना भी है। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहेगा। जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। व्यय ज्यादा होंगें। संतान पक्ष पीड़ित करेगा। वाहन सुख उत्तम। माता का स्वास्थ्य ठीक-ठीक रहेगा।

वृषभ- इस सप्ताह प्रेम संबंधों में सावधानी रखें अन्यथा परेशानी होगी। जीवनसाथी का शारीरिक स्वास्थ्य एवं व्यवहार ठीक-ठीक रहेगा। वाहन सावधानी से चलावें। बेवजह के विवादों से बचें। भूमि संबंधी कोई सौदे न करें। कारोबार ठीक रहेगा। आवक अच्छी होगी।

मिथुन- इस सप्ताह शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी परेशानी रहेगी। शत्रु भी परेशान कर सकते हैं। मित्र भी वांछित सहयोग नहीं देंगें। संतान संबंधी चिंता का निवारण होगा। प्रेम संबंधों में अनुकूलता रहेगी। जीवनसाथी का सहयोग अच्छा रहेगा। बेवजह के विवादों में न पड़ें।

कर्क- जीवनसाथी का सहयोग एवं व्यवहार इस सप्ताह मध्यम रहेगा। संतान पक्ष सहयोग करेगा। आवक मे वृद्धि होगी। कारोबार वृद्धि की तरफ बढ़ेगा। मित्रों से मिलना-जुलना बढ़ेगा। शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान दें। वाहन सावधानी पूर्वक चलावें। विवादों में न पड़े अन्यथा कष्ट होगा। परिजनों का उत्तम सहयोग मिलेगा।

सिंह- इस सप्ताह संतान पक्ष आपको पीड़ित कर सकता है। अनायास कोई नुकसान भी हो सकता है अतः सावधान रहें। जीवनसाथी का सहयोग एवं स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। प्रेम संबंध ठीक रहेंगें। कारोबार में हल्का सा उतार-चढ़ाव दिखाई देगा। यात्रा को टालें। भूमि-भवन के विवाद में न पड़ें।

कन्या- शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। धन हानि अथवा अधिक व्यय के योग हैं। पारिवारिक परिवेश अमूमन अच्छा रहेगा। कोई रुका कार्य होगा। जीवनसाथी का स्वास्थ्य एवं सहयोग मध्यम रहेगा। कारोबार भी मध्यम रहेगा। लाभ सीमित होंगें।

तुला- जीवनसाथी का स्वास्थ्य एवं व्यवहार ठीक-ठीक रहेगा। किसी व्यक्ति के व्यवहार से मन दुखी होगा। अस्थियों में कष्ट संभव है। वाहन कष्ट दे सकता है। परिजनों का वांछित सहयोग मिलेगा। आय संतोषजनक रहेगी। बेवजह के व्यय भी हो सकते हैं। प्रेम सबंधों के प्रति सावधान रहें।

वृश्चिक- मन में कुछ खिन्नता रहेगी। मानसिक तनाव भी रहेगा। जीवनसाथी का सहयोग एवं व्यवहार अच्छा रहेगा। पिता को या पिता से कष्ट संभव है। माता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। विद्यार्थियों के लिए अनुकूल समय है। किसी रोग का अल्प कष्ट होगा। विशेष रुप से श्वसन अथवा उद्विकारों के लिए लापरवाह न रहें। शत्रु पीड़ा होगी।

धनु- इस सप्ताह आप अपने शारीरिक स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। बेवजह के विवादों से बचें। भूमि संबंधी कार्य कष्ट दे सकते हैं। संतान पक्ष अनुकूल रहेगा। जीवनसाथी का स्वास्थ्य एवं सहयोग अच्छा रहेगा। कोई प्रतिक्षित कार्य होगा। कारोबार की दृष्टि से सप्ताह धनात्मक है।

मकर- इस सप्ताह माता के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी पर आंख मींच कर भरोसा न करें। संतान पक्ष कुछ परेशान कर सकता है, किन्तु जीवनसाथी का स्वास्थ्य एवं सहयोग अच्छा रहेगा। कारोबार अच्छा चलेगा। आवक अच्छी होगी। कोई रुका हुआ पैसा प्राप्त होगा।

कुंभ- यात्रा के योग बन सकते हैं किन्तु उसे टालें। नौकरी अथवा प्यार में कुछ ऋणात्मकता दिखाई देगी। शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। संतान पक्ष की तरफसे पर्याप्त सहयोग मिलेगा। प्रेम संबंध फले-फूलेंगे। आवक मध्यम।

मीन- कारोबार की दृष्टि से यह सप्ताह श्रेष्ठ है। किसी रुके हुए कार्य के होने से खुशी होगी। जीवनसाथी का व्यवहार अच्छा रहेगा। प्रेम संबंधों में सुधार होगा। संतान पक्ष आंशिक रूप से पीड़ित कर सकता है। बेवजह के विवादों में न पड़ें। वाहन सुख उत्तम। कारोबार मध्यम रहेगा। लाभ सीमित होंगें। वाहन सावधानी से चलावें।

श्रीमान उमेश पांडे
ज्योतिष एवं वास्तुविद
महात्मा गांधी मार्ग, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)
मो. 8602912030

इस सप्ताह की ग्रह स्थितियां

■ **सूर्य** – कर्क राशि में 17 से सिंह राशि में ■ **चंद्रमा** – वृश्चिक से धुन राशि में ■ **मंगल** – वृषभ राशि में ■ **बुध** – सिंह राशि में ■ **गुरु** – वृषभ राशि में ■ **शुक्र** – सिंह राशि में ■ **शनि** – कुंभ राशि में वक्री ■ **राहु** – मीन राशि में ■ **केतु** – कन्या राशि में

देश की सबसे बडी एयर लाइन भी घाटे में

विमानों और घरेलू बाजार में हिस्सेदारी के मामले में देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो एक बार फिर घाटे में है। कंपनी ने वित्तीय वर्ष 24-25 की दूसरी तिमाही के परिणामों में इसकी जानकारी दी है।

राइजिंग इन्दौर
■ रिपोर्टर

एयरलाइन इंडिगो का संचालन करने वाली कंपनी इंटरग्लोब एविएशन ने शुक्रवार को सितंबर तिमाही के नतीजे जारी किए। दो साल बाद आमदनी बढ़ने के बावजूद एयरलाइन एक बार फिर घाटे में है। कंपनी के आंकड़ों के अनुसार जुलाई-सितंबर तिमाही में उसे 986.7 करोड़ रुपए का शुद्ध घाटा हुआ। कंपनी के अनुसार विमानों के खड़े होने और ईंधन की ऊंची लागत से उसके मुनाफे पर असर पड़ा। चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में इंडिगो का मुनाफा 2,728 करोड़ रुपये था। वहीं, एक साल पहले सितंबर 2023 में समाप्त तिमाही के दौरान एयरलाइन का मुनाफा 188.9 करोड़ रुपये था।

ईंधन पर खर्च 13 प्रतिशत बढ़ा, विमानों व इंजन का किराया भी चार गुना ज्यादा

इंडिगो के अनुसार दूसरी तिमाही में ईंधन पर खर्च 12.8 प्रतिशत बढ़कर 6,605.2 करोड़ रुपये हो गया, एक साल पहले इसी अवधि में यह खर्च 5,856 करोड़ रुपये था। दूसरी तिमाही में विमान और इंजन का किराया भी बढ़कर 763.6 करोड़ रुपये हो गया, जो पिछले वर्ष की समान तिमाही में महज 195.6 करोड़ रुपये था। इसके अलावा कंपनी ने सितंबर तिमाही में करीब 79.6 करोड़ रुपये का टैक्स चुकाया, जबकि एक साल पहले कंपनी ने टैक्स मद में महज 20 लाख रुपये चुकाए थे। सितंबर तिमाही में कंपनी का कुल व्यय लगभग 22 प्रतिशत बढ़कर 18,666.1 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी का घाटा बढ़ाने में इस आंकड़े का सबसे अधिक योगदान रहा।

आमदनी पर खर्चा भारी

इंडिगो की प्रति यात्री आय (प्रति किलोमीटर लागत के आधार पर गणना की जाने वाली यील्ड) सितम्बर तिमाही में 2.3 प्रतिशत बढ़कर 4.55 रुपये प्रति किलोमीटर हो गई, जबकि एक साल पहले इसी तिमाही में यह यह 4.44 रुपये प्रति किलोमीटर और अप्रैल-जून तिमाही में 5.24 रुपये प्रति किलोमीटर थी। सितंबर तिमाही के आंकड़ों के अनुसार इंडिगो की आय 13.6 प्रतिशत बढ़कर 16,970 करोड़ रुपये हो गई। लेकिन हवाई अड्डों का चार्ज 41प्रतिशत बढ़ने, विमानों के किराये व मेंटेनेंस का खर्च 29.6प्रतिशत बढ़ने और ईंधन खर्च 13प्रतिशत बढ़ने से एयरलाइन अपनी आय से मुनाफा निकालने में असफल रही और दो साल के अंतराल के बाद एक बार फिर घाटे में आ गई। पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ने के कारण जेट ईंधन की कीमतों में पिछले क्रछ महीनों में काफी उतार-चढ़ाव दिखा है, इसका असर अब कंपनियों के वित्तीय परिणामों पर भी दिखने लगा है।

63प्रतिशत हिस्सेदारी इंडिगो के पास

सितंबर तिमाही में देश की सबसे बड़ी एयरलाइन ने 2.78 करोड़ यात्रियों को सफर कराया, जो एक साल पहले की समान अवधि की तुलना में लगभग छह प्रतिशत अधिक है। सितंबर तिमाही में इंडिगो ने 63 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी हासिल की। अप्रैल जून तिमाही में कंपनी की बाजार हिस्सेदारी 61 फीसदी थी। शुक्रवार को नतीजे जारी करने के दौरान कंपनी का मार्केट कैप करीब 1.68 लाख करोड़ रुपये रहा और यह देश की 52वीं सबसे मूल्यवान कंपनी रही।

चुनाव... क्या - क्या करवाता है...

राइजिंग इन्दौर
■ रिपोर्टर

पीसीसी चीफजीतू पटवारी शनिवार को विजयपुर उप चुनाव का प्रचार करने पहुंचे इस दौरान उन्होंने बच्चों की जूठी राबड़ी खाई और नाई की मांग पर टपरे में सेविंग भी करवाई। पटवारी विजयपुर और बुधनी उपचुनाव जीतने के लिए पूरी ताकत झोंक रहे हैं।

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी विजयपुर और बुधनी में होने वाले उपचुनाव में जीत के लिए पूरी ताकत झोंक रहे हैं। खास बात यह है कि जीतू पटवारी जनता के बीच पहुंचकर उनके दुख दर्द को समझ रहे हैं। जीतू पटवारी का विजयपुर के एक गांव का वीडियो सामने आया है जिसमें पटवारी ने दो बच्चों को रबड़ी खिलाई और उनकी जूठी रबड़ी खुद भी खाई। इसके बाद वहां मौजूद जनता ने जोरदार ताली से उनका अभिवादन किया। वहीं दूसरे वीडियो में एक नाई विनीत कुमार के आग्रह पर जीतू पटवारी ने टपरे में बैठकर सेविंग करवाई और पटवारी ने कहा कि विनीत के आग्रह पर हम सेविंग करवाने आए हैं। विनीत ने हमें बताया है रामनिवास रावत केवल कांग्रेस से जीत सकते हैं दूसरे पार्टी से हार जाएंगे। उन्होंने कहा यहां आकर चुनाव की जानकारी भी हमें मिल गई। दरअसल जीतू पटवारी इन दोनों ही उपचुनाव में पूरी ताकत झोंक रहे हैं क्योंकि इन चुनावों के रिजल्ट ही उनके राजनीतिक भविष्य की राह तय करेगा।

रावत ने किया विश्वासघात

जीतू पटवारी ने विजयपुर विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण अंचलों में नुक्कड़ सभाओं के माध्यम से कांग्रेस प्रत्याशि मुकेश मल्होत्रा को विजयी बनाने का मतदाताओं से आग्रह किया। पटवारी ने इस दौरान जनसंपर्क करते हुए कहा कि 25 साल से प्रदेश में भाजपा की सरकार है और 6 बार से यहां रामनिवास रावत विधायक रहे। यहां की जनता को धोखा दिया उनके साथ विश्वासघात किया। वोट लिए और भाजपा से मिल गए।

कबूतर को दाना डालने पर प्रतिबंध लगाने की तैयारी

दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) कबूतरों को दाना डालने वाले स्थानों पर प्रतिबंध लगाने के प्रस्ताव पर विचार कर रही है। कबूतरों की अधिक संख्या होने के कारण स्वास्थ्य को खतरा हो सकता है। अगर प्रस्ताव को मंजूरी मिल जाती है तो फुटपाथ, गोल चक्कर और सड़क-चौराहों पर पाए जाने वाले इस तरह के स्थल जल्द ही बंद हो सकते हैं।

एमसीडी के अधिकारियों ने बताया कि योजना अभी प्रारंभिक चरण में है। जल्द ही इस पर परामर्श जारी होने की उम्मीद है। इस प्रस्ताव का उद्देश्य कबूतरों की बीट से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों को कम करना है। इसमें साल्मोनेला, ई कोलाई और इन्फ्लूएंजा जैसे रोगाणु होने का खतरा रहता है। ये अस्थमा जैसी श्वसन संबंधी बीमारियों को बढ़ा सकते हैं। डॉ. उषास्त धीर ने कहा कि ट्रांसप्लांट रोगियों के लिए यह जोखिम जीवन के लिए खतरा हो सकता है। जब कबूतर बड़ी संख्या में इकट्ठा होते हैं, तो उनकी बीट और पंख फड़फड़ाना विभिन्न रोगजनकों, विशेष रूप से क्रिप्टोकोकोसिस जैसे फंगल के लिए प्रजनन स्थल बनाता है। इनमें हाइपर सेंसिटिविटी न्यूमोनाइटिस, अस्थमा और यहां तक कि मधुमेह जैसी स्थितियों वाले व्यक्तियों में गंभीर फंगल निमोनिया भी शामिल है।

वहीं, डॉक्टर डॉ. मीत घोनिया के अनुसार, कबूतरों के कारण हाइपर सेंसिटिविटी न्यूमोनाइटिस हो सकता है। इससे सामान्य लोगों के स्वस्थ फेफड़ों में सूजन और फाइब्रोसिस हो सकता है। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में ओपीडी में कई मामले देख रहे हैं।

दीपावली पर लक्ष्मी जी के साथ क्यों होती है श्री गणेश जी की भी पूजा ?

पेज 1 से जारी...

लक्ष्मी जी जब सागर मन्थन में मिलीं, और भगवान विष्णु से विवाह किया, तो उन्हें सृष्टि की धन और ऐश्वर्य की देवी बनाया गया। उन्होंने धन को बांटने के लिए मैनेजर कुबेर को बनाया।

कुबेर कुछ कंजूस वृति के थे। वे धन बांटते नहीं थे, स्वयं धन के भंडारी बन कर बैठ गए। माता लक्ष्मी परेशान हो गई। उनकी सन्तान को कृपा नहीं मिल रही थी। उन्होंने अपनी व्यथा भगवान विष्णु को बताई। भगवान विष्णु ने उन्हें कहा कि - तुम प्रबंधक बदल लो। माँ लक्ष्मी बोली - यक्षों के राजा कुबेर मेरे परम भक्त हैं। उन्हें बुरा लगेगा। तब भगवान विष्णु ने उन्हें श्री गणेश जी की दीर्घ और विशाल बुद्धि को प्रयोग करने की सलाह दी। माँ लक्ष्मी ने श्री गणेश जी को धन का बांटने वाला बनने को कहा। श्री गणेश जी ठहरे महा बुद्धिमान! वे बोले, माँ, मैं जिसका भी नाम बताऊंगा, उस पर आप कृपा कर देना। कोई किंतु, परन्तु नहीं। माँ लक्ष्मी ने हां कर दी। अब श्री गणेश जी लोगों के सौभाग्य के विघ्न व रुकावट को दूर कर उनके लिए धनागमन के द्वार खोलने लगे।

ऐसे में कुबेर भंडारी ही बनकर रह गए। श्री गणेश जी पैसा देने वाले बन गए। गणेश जी की दरियादिली देख, माँ लक्ष्मी ने अपने मानस पुत्र श्री गणेश को आशीर्वाद दिया कि जहां वे अपने पति नारायण के सँग ना हों, वहाँ उनका पुत्रवत गणेश उनके साथ रहें।

दीपावली आती है कार्तिक मास की अमावस्या को। भगवान विष्णु उस समय योगनिद्रा में होते हैं। वे जागते हैं ग्यारह दिन बाद, देव उठावनी एकादशी को। माँ लक्ष्मी को पृथ्वी भ्रमण करने आना होता है शरद पूर्णिमा से दीवाली के बीच के पन्द्रह दिनों में। तो वे संग ले आती हैं श्री गणेश जी को इसलिए दीपावली को लक्ष्मी-गणेश की पूजा होती है।

दीपावली का दीपक करता है कई समस्याओं का समाधान

कार्तिक अमावस्या की रात को दीपों का पर्व दिवाली मनाया जाता है। मां लक्ष्मी के आगमन के लिए दीपक जलाने से घर में सुख-समृद्धि आती है लेकिन इसके लिए जरूरी है सही तरीके का दीपक नियमपूर्वक जलाया जाए। इसी प्रकार दीपक जलाने के कुछ और भी फायदे होते हैं। अब यह जानना जरूरी है कि दीपावली पर कौन सा दीपक कैसे लगाया जाए-

घी का चौमुखी दीपक

धर्म और वास्तु शास्त्र के अनुसार दीपावली के दिन मां लक्ष्मी के सामने जलाए गए दीपकों में एक दीपक घी का जरूर जलाएं। यह दीपक घी का हो और बाकी दीयों से बड़ा हो। साथ ही यह चौमुखी हो। इससे मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं।

दक्षिण दिशा में जरूर जलाएं दीपक

दीपावली के दिन एक दीपक दक्षिण दिशा में जरूर जलाएं। इससे घर में नकारात्मकता नहीं रहती है और धन-संपत्ति बढ़ती है।

कलावे वाला दीपक

यदि आर्थिक तंगी से परेशान हैं तो कलावे वाला घी का दीपक जलाएं। यानी कि रुई की बाती की जगह कलावे का उपयोग करें। इससे सौभाग्य की प्राप्ति होती है ।

मुख्य द्वार पर घी का दीपक

यदि सफलता पाने में समस्या आ रही है तो दीपावली के दिन मुख्य द्वार पर भी एक घी का दीपक रखें। इससे रुके हुए काम पूरे होंगे । साथ ही सफलता के रास्ते खुलेंगे।

कार्यों में आने वाली बाधाएं समाप्त करने हेतु

इसके लिए दीपावली के दिन उत्तर दिशा की तरफसेमल की रूई की बत्ती का दीपक जलाना चाहिए। विभिन्न दीपकों को जलाने के लिए इस बात का विशेष ध्यान रखें कि कभी भी एक दीपक से दूसरा दीपक ना जलाएं। बल्कि दीपक जलाने के लिए मोमबत्ती, माचिस की तीली या लाइटर का उपयोग करें। वरना एक दीपक से दूसरा दीपक जलाने से कर्ज बढ़ता है, धन की हानि होती है।

गजकुण्डी/दचकुंडी/धमुका

एक भुला दिया गया पटाखा-देसी धमाका

राइजिंग इन्दौर
■ रिपोर्टर

जो लोग ग्रामीण पृष्ठभूमि से हैं या 90 के दशक से पहले जन्मे हैं उन्हें यह शब्द सुनकर मेरी इस पोस्ट को पढ़ने की इच्छा जाग जाएगी। गजकुंडी की कहानी है ही कुछ ऐसी। इसका प्रयोग सबसे अधिक गोवर्धन पूजा के दिन पशुधन गोधन बैल भैंस आदि का जुलूस निकलता था उस समय बहुत धमाके किए जाते थे पाड़ों की लड़ाई भी होती थी।

पोटाश और गंधक के एक अनुपात में मिश्रित पाउडर को को एक विशेष प्रकार के औजार कहें या यंत्र में भरकर जब जमीन पर ठोका जाता है तो सुतली बम से भी भयंकर आवाज होती हैं और कान में टींईईई का साउंड देर तलक सुनाई देता था। इसी मसले से एक फटाका बनता था जिस पर प्रतिबंध लग गया है। लहसुन फटाका। जिसे जमीन पर जोर से मारने पर धमाका होता था।

एक लंबी लोहे की रॉड जिसे गज कहते हैं, गज भर लंबी! 25 से 40 इंच तक! आखिर में हाथी के पेट जैसी मोटी चौकोर या ड्रम नुमा हिस्सा, इस आखिरी पेट जैसे हिस्से में एक छेद

होता है, जिसमें पोटाश भरकर कागज की पैकिंग से भरकर पैक किया जाता है। फिर पूरी ताकत से जमीन पे दे मारते हैं, एक धमाका होता है जो बहुत दूर तक सुनाई देता है। इसका एक छोटा स्वरूप भी बनाया जाता है जो जमीन से समांतर छड़ रखकर कम उम्र के बच्चों द्वारा प्रयुक्त किया जाता है।

1. चौकोर कुंडी के ऊपरी समतल भाग से मध्य तक एक खड़ा (वर्टिकल) नालीदार छिद्र और एक बाजू से आड़ा (हॉरिजॉन्टल) नालीदार छेद होता है, जो अंग्रेजी के रु अक्षर तरह होते हैं।
2. गजकुंडी का बारूद केवल पोटाश से नहीं बल्कि पीले रंग के गन्धक और सफेद रंग के पोटाश का समानुपातिक मिश्रण होता है।
3. कुंडी के बाजूवाले छेद में कागज या कपड़े को ठूंसकर बन्द करने के पश्चात खड़ी नली में बारूद भर जाता है।
4. खड़ी नली में गज लगा कर हल्की ताकत के साथ कुंडी को कठोर सतह पर मारने के साथ ही धमाका होता है।
5. गजकुंडी चलाने में सावधानी यह रखना होती है कि कागज/ कपड़े से बंद किये गये छिद्र पर आपकी उंगलियां ना हो,अन्यथा की स्थिति में कुंडी के दबने के साथ हाथ वहीं रह जाने पर उंगलियों के चिथड़े हो जाते हैं।

गजकुण्डी धारक सदैव जोश में होता है जिसकी जेब मे पोटाश को थैली, कपड़े को चिंदी या पेपर और शेर का जिगर और पूरे मोहल्ले या गांव में घूम घूम कर धमाके करना गजकुण्डी के मालिक का काम। हमें इसे चलाने का सौभाग्य मिला, कम मिला पर मिला, मालवा में बहुत प्रसिध्द थी गजकुण्डी। इसमें बारूदी मसाला भरने मैं लापरवाही बरतने पर हाथ घायल भी हुए हैं और उंगलियां भी गायब हो गई इसीलिए अब इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

प्रकाशक एवं मुद्रक गौरव गुप्ता द्वारा स्वामी अशर्फीलाल विमलादेवी मीडिया सर्विसेस प्रा.लि. के लिए डी. बी. कॉर्प लि., 44-45/ए, 50-51/ए, सेक्टर एफ, इंडस्ट्रियल एरिया, सांवेर रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 401-402, डी.एम. टॉवर जंजीरवाला चौराहा, इंदौर 452001 से प्रकाशित। संपादक- दीपक गुप्ता, कार्यकारी संपादक-जितेंद्र जाखेटिया*। फोन नंबर-0731-4032200, आर.एन.आई. नं. MPHIN/2013/52898* समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार।